**MAA OMWATI INTERNATIONAL EDUCATION CITY**

***V.P.O. Hassanpur, Teh. Hodal Distt. Palwal (HR.)***

# B.A. 5th Semester History

# मध्यकाल की अवधारणा

# unit 1

# (Concept of Medieval Age): ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

*(Historical Perspective of the Medieval Age)*

## परिचय

इतिहास को समझने के लिए उसे विभिन्न कालखंडों में विभाजित किया जाता है। सामान्यतः विश्व इतिहास को तीन प्रमुख कालों में बाँटा जाता है—

1. **प्राचीन काल (Ancient Age)**
2. **मध्यकाल (Medieval Age)**
3. **आधुनिक काल (Modern Age)**

**मध्यकाल** वह समय है जो प्राचीन और आधुनिक काल के बीच स्थित है। यह केवल समय का विभाजन नहीं, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का भी एक महत्वपूर्ण युग है।

# मध्यकाल की अवधारणा (Concept of Medieval Age)

'मध्यकाल' (Medieval) शब्द लैटिन भाषा के **Medium Aevum** (मध्यम युग) से निकला है, जिसका अर्थ है—**दो युगों के बीच का समय।**

यूरोपीय इतिहासकारों ने यह शब्द उस काल के लिए प्रयोग किया जो **476 ई.** में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन से लेकर लगभग **1453 ई.** (कॉन्स्टेंटिनोपल का पतन) या **1492 ई.** (कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज) तक माना जाता है।

भारतीय इतिहास में मध्यकाल का स्वरूप अलग है क्योंकि यहाँ राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास यूरोप से भिन्न रहा।

# इतिहासकारों की दृष्टि में मध्यकाल

### 1. यूरोपीय दृष्टिकोण

यूरोप में मध्यकाल को प्रारम्भ में **"Dark Age" (अंधकार युग)** कहा गया क्योंकि—

- विज्ञान और तर्क का विकास धीमा था।
- चर्च का अत्यधिक प्रभाव था।
- शिक्षा सीमित थी।
- सामंतवाद (Feudalism) का प्रभुत्व था।

बाद में इतिहासकारों ने इस धारणा को बदलते हुए कहा कि मध्यकाल केवल अंधकार का युग नहीं बल्कि विश्वविद्यालयों, नगरों, कला और व्यापार के विकास का भी काल था।

### 2. भारतीय दृष्टिकोण

भारतीय इतिहास में मध्यकाल को केवल राजनीतिक परिवर्तनों के आधार पर नहीं देखा जाता।

यह काल विशेष रूप से—

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना
- क्षेत्रीय राज्यों का विकास
- भक्ति आंदोलन
- सूफी आंदोलन

- मुगल साम्राज्य
- सांस्कृतिक समन्वय

का युग माना जाता है।

# भारतीय इतिहास में मध्यकाल की समय-सीमा

अधिकांश भारतीय इतिहासकारों के अनुसार—

- **प्रारम्भिक मध्यकाल : 600 ई.–1200 ई.**
- **उत्तर मध्यकाल : 1200 ई.–1700 ई.**

कुछ इतिहासकार इसे—

- **750 ई.–1206 ई.**
- **1206 ई.–1707 ई.**

भी मानते हैं।

# मध्यकाल की प्रमुख विशेषताएँ

## 1. राजनीतिक विशेषताएँ

- बड़े साम्राज्यों का विघटन।
- क्षेत्रीय राज्यों का उदय।
- दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य की स्थापना।
- सामंतवादी व्यवस्था का विकास।

## 2. सामाजिक विशेषताएँ

- जाति व्यवस्था अधिक जटिल हुई।
- महिलाओं की स्थिति में गिरावट।
- पर्दा प्रथा एवं बाल विवाह का प्रसार।
- सामाजिक रूढ़ियों का विकास।

## 3. आर्थिक विशेषताएँ

- कृषि मुख्य व्यवसाय रही।
- भूमि राजस्व व्यवस्था विकसित हुई।
- व्यापार एवं उद्योग का विस्तार।
- नगरों का विकास।

## 4. धार्मिक विशेषताएँ

- भक्ति आंदोलन का विकास।
- सूफी संतों का प्रभाव।
- धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय।
- मंदिर एवं मस्जिद स्थापत्य का उत्कर्ष।

## 5. सांस्कृतिक विशेषताएँ

- भारतीय एवं इस्लामी संस्कृति का समन्वय।
- साहित्य, संगीत एवं चित्रकला का विकास।
- वास्तुकला में नई शैलियों का उदय।
- क्षेत्रीय भाषाओं का विकास।

# मध्यकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Perspective)

मध्यकाल को समझने के लिए इतिहासकार निम्न आधारों का अध्ययन करते हैं—

### (क) राजनीतिक परिवर्तन

- राजवंशों का परिवर्तन।
- नई प्रशासनिक व्यवस्थाएँ।
- विदेशी आक्रमण।

### (ख) सामाजिक परिवर्तन

- जातीय संरचना।
- सामाजिक संस्थाएँ।
- शिक्षा व्यवस्था।

### (ग) आर्थिक परिवर्तन

- कृषि उत्पादन।
- व्यापार मार्ग।
- मुद्रा प्रणाली।

### (घ) धार्मिक परिवर्तन

- हिन्दू धर्म में भक्ति आंदोलन।
- इस्लाम का प्रसार।
- सूफी परंपरा।
- जैन एवं बौद्ध धर्म का प्रभाव।

### (ङ) सांस्कृतिक परिवर्तन

- साहित्य
- स्थापत्य कला
- संगीत
- चित्रकला

# क्या मध्यकाल वास्तव में "अंधकार युग" था?

आधुनिक इतिहासकार इस धारणा से सहमत नहीं हैं।

वे मानते हैं कि—

- इस काल में अनेक विश्वविद्यालय स्थापित हुए।
- व्यापार का विस्तार हुआ।
- विज्ञान एवं तकनीक में प्रगति हुई।
- कला एवं साहित्य का उत्कर्ष हुआ।
- भारत में सांस्कृतिक समन्वय की नई परंपरा विकसित हुई।

इसलिए मध्यकाल को केवल "अंधकार युग" कहना उचित नहीं है।

# प्रमुख इतिहासकारों के विचार

- Romila Thapar के अनुसार, इतिहास का काल-विभाजन केवल राजनीतिक घटनाओं पर आधारित नहीं होना चाहिए; सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं।
- Satish Chandra ने भारतीय मध्यकाल को सांस्कृतिक समन्वय और प्रशासनिक विकास का युग माना।
- Irfan Habib ने मध्यकालीन भारत की कृषि, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना का विस्तृत विश्लेषण किया।
- R. S. Sharma ने प्रारम्भिक मध्यकाल में सामंतवाद (Feudalism) के विकास पर विशेष बल दिया।

# मध्यकाल के प्रमुख स्रोत

1. अभिलेख (Inscriptions)
2. सिक्के (Coins)
3. यात्रियों के वृत्तांत

4. राजकीय अभिलेख
5. साहित्यिक ग्रंथ
6. पुरातात्त्विक साक्ष्य
7. स्थापत्य एवं स्मारक

# महत्त्व (Importance of the Medieval Age)

- भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप का निर्माण।
- आधुनिक प्रशासनिक संस्थाओं की नींव।
- क्षेत्रीय भाषाओं एवं साहित्य का विकास।
- व्यापार एवं शहरीकरण का विस्तार।
- भक्ति एवं सूफी आंदोलनों द्वारा सामाजिक सुधार।
- कला, संगीत, चित्रकला और वास्तुकला का उत्कर्ष।

# निष्कर्ष

मध्यकाल केवल प्राचीन और आधुनिक काल के बीच का संक्रमणकाल नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक पुनर्गठन, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, धार्मिक आंदोलनों तथा सांस्कृतिक समन्वय का महत्वपूर्ण युग था। आधुनिक इतिहासलेखन में इसे "अंधकार युग" के बजाय परिवर्तन और विकास के काल के रूप में देखा जाता है।

प्राचीन यूरोप से मध्यकालीन यूरोप में परिवर्तन (लगभग 5वीं से 9वीं शताब्दी ईस्वी) का मुख्य कारण रोमन साम्राज्य का पतन था。 इससे उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता ने **सामंतवाद (Feudalism)** को जन्म दिया, जो भूमि, सैन्य सेवा और आपसी वफादारी पर आधारित एक पदानुक्रमित व्यवस्था थी]

प्राचीन से मध्यकालीन यूरोप में परिवर्तन, सामंतवाद के उदय, उसकी विशेषताओं और पतन को समझने के लिए यहाँ विस्तृत नोट्स दिए गए हैं:

**1. प्राचीन से मध्यकाल में परिवर्तन (Transition to Medieval Europe)**

- **रोमन साम्राज्य का पतन (Fall of Roman Empire):** 476 ईस्वी में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के बाद, यूरोप कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया।
- **केंद्रीकृत सत्ता का अभाव:** केंद्रीय शक्ति कमजोर हो गई और बाह्य आक्रमण (जैसे वाइकिंग्स, मैग्यार) बढ़ने लगे।
- **जागीरदारी (Manorialism) का उदय:** सुरक्षा और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लोग स्थानीय रईसों या सरदारों पर निर्भर होने लगे। **2. सामंतवाद का उदय (Rise of Feudalism)**
- **9**वीं और 10वीं शताब्दी के दौरान, कैरोलिंगियन साम्राज्य के विकेंद्रीकरण के परिणामस्वरूप सामंतवाद एक प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था बन गया।
- राजाओं के पास विशाल सेना को बनाए रखने के लिए प्रशासनिक ढांचा या पर्याप्त धन नहीं था। इसलिए, उन्होंने अपनी भूमि का एक हिस्सा (Fief) रईसों और शूरवीरों को सौंपना शुरू कर दिया।

**3. सामंतवाद की मुख्य विशेषताएँ (Features of Feudalism)**

- **पदानुक्रम (Hierarchy):** सामंती समाज पिरामिड की तरह बंटा था:
  - **राजा (Monarch):** भूमि का सर्वोच्च स्वामी (लेकिन अक्सर नाममात्र की शक्ति)।
  - **लॉर्ड/जागीरदार (Lords/Nobles):** राजा के अधीन शक्तिशाली रईस जो जागीरों के मालिक थे।
  - **वसाल/शूरवीर (Vassals/Knights):** लॉर्ड्स के अधीन योद्धा जिन्हें भूमि (Fief) और सुरक्षा मिलती थी और वे बदले में सैन्य सेवा देते थे।
- **कृषक/दास (Serfs/Peasants):** समाज का सबसे निचला वर्ग जो जमीन से बंधे होते थे। वे खेतों में काम करते थे और बदले में लॉर्ड्स से सुरक्षा प्राप्त करते थे।
- **आपसी दायित्व (Mutual Obligations):** यह व्यवस्था वफादारी और वादों पर टिकी थी। लॉर्ड सुरक्षा और भूमि देते थे, जबकि वसाल/शूरवीर युद्ध के समय राजा या लॉर्ड का साथ देते थे।
- **आत्मनिर्भर जागीर (Self-sufficient Manor):** प्रत्येक जागीर एक स्वतंत्र इकाई थी जहाँ खेती, पशुपालन और दस्तकारी का सारा काम होता था। बाहरी दुनिया से व्यापार न के बराबर था।

**4. सामंतवाद का पतन (Decline of Feudalism)**

- **शहरी केंद्रों और व्यापार का उदय (Rise of Towns and Trade):** 11वीं सदी के बाद व्यापार और वाणिज्य के विस्तार ने शहरी केंद्रों को जन्म दिया। इससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा (Money) का चलन फिर से शुरू हो गया, जो सामंतवाद के लिए एक बड़ा झटका था।
- **ब्लैक डेथ (Black Death):** 14वीं सदी में फैली इस भयानक महामारी (प्लेग) से यूरोप की एक बड़ी आबादी मर गई। इससे मजदूरों की भारी कमी हो गई, जिसके कारण बचे हुए किसानों की मोलभाव करने की क्षमता बढ़ी और वे मजदूरी मांगने लगे।

- **मजबूत राजतंत्र (Rise of Strong Monarchies):** राजाओं ने नगरों के व्यापारियों की आर्थिक सहायता से अपनी स्थायी सेनाएँ बनाना शुरू कर दिया। इससे वसाल (Vassals) पर राजाओं की निर्भरता कम हो गई।
- **बारूद और तोप का आविष्कार:** युद्ध में बारूद के उपयोग ने शूरवीरों (Knights) के पारंपरिक किले और कवच को अप्रभावी कर दिया।
- **पुनर्जागरण (Renaissance) और बौद्धिक जागरण:** 15वीं सदी के बाद पुनर्जागरण ने लोगों की सोच को बदला। सामंतवादी प्रथाओं के खिलाफ किसानों के विद्रोहों ने भी इस व्यवस्था की जड़ें हिला दीं। धर्म और राजनीति के अलग होने से आधुनिक काल की शुरुआत हुई, जो सामंतवाद के अंत का प्रतीक बनी। ईसाई धर्म की उत्पत्ति पहली शताब्दी में रोमन यहूदी में नाज़रेथ के यीशु की शिक्षाओं के आधार पर हुई थी। ईसाई परंपरा के अनुसार, इसकी आधिकारिक स्थापना पेंटेकोस्ट के दिन हुई थी, जो यीशु के शिष्यों पर पवित्र आत्मा के अवतरण का प्रतीक है।

**चर्च का गठन**

- **उत्पत्ति:** यह यहूदी धर्म के भीतर एक जमीनी स्तर के आंदोलन के रूप में शुरू हुआ। यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, शुरुआती अनुयायी आराधनालयों और निजी गृह-चर्चों में एकत्र होते थे।
- **संस्थागतकरण:** 313 ईस्वी तक, मिलान के फरमान ने इस धर्म को कानूनी मान्यता दे दी, जिससे स्वतंत्र चर्च भवनों का निर्माण हुआ। सदियों से, इसने एक परिष्कृत धार्मिक और पदानुक्रमित संरचना विकसित की, जिसमें पोप रोमन कैथोलिक चर्च का नेतृत्व करते हैं।

**चर्च की भूमिका**

- **आध्यात्मिक और नैतिक:** इसका प्राथमिक कार्य धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करना, संस्कारों का संचालन करना (जैसे, बपतिस्मा और यूखारिस्ट), और शाश्वत मुक्ति का मार्गदर्शन करना है।
- **सामाजिक सामंजस्य:** ऐतिहासिक रूप से इसने रक्त संबंधों के बजाय आध्यात्मिक भाईचारे पर आधारित सामाजिक-धार्मिक बंधन प्रदान किया है। इसके कार्यों में शिक्षा और दान (कमजोर लोगों की देखभाल) से लेकर युवाओं की समस्याओं का समाधान करना और विवाह एवं अंत्येष्टि जैसे जीवन के महत्वपूर्ण अनुष्ठानों का संचालन करना शामिल है।

**राज्य और समाज**

- **शक्तियों का पृथक्करण:** यह अवधारणा बाइबिल के इस निर्देश से उत्पन्न हुई है कि "सीज़र की चीज़ें सीज़र को दो, और परमेश्वर की चीज़ें परमेश्वर को दो"। इसने लौकिक (राज्य) और आध्यात्मिक (चर्च) सत्ताओं के बीच विभाजन स्थापित किया।

- **ऐतिहासिक घटनाक्रम:** यह संबंध व्यापक रूप से उतार-चढ़ाव भरा रहा है। मध्य युग के दौरान, चर्च का व्यापक राजनीतिक प्रभाव था और कभी-कभी तो यह स्वयं एक साम्राज्य की तरह कार्य करता था। सेंट ऑगस्टीन जैसे विचारकों का मानना था कि चर्च राज्य को नैतिक रूप से मार्गदर्शन करता है, न कि जबरदस्ती राजनीतिक नियंत्रण लेता है।
- **आधुनिक युग:** धर्म सुधार आंदोलन, प्रबोधन काल और आधुनिक क्रांतियों के बाद, अधिकांश आधुनिक समाज चर्च और राज्य के कानूनी पृथक्करण के तहत कार्य करते हैं। यह धर्मनिरपेक्ष मॉडल धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करता है, जबकि नागरिक व्यवस्था, कानून और भौतिक प्रगति का दायित्व राज्य को सौंपता है।

ऐतिहासिक और सामाजिक-धार्मिक संदर्भों में और अधिक गहन अध्ययन के लिए, आप चर्च इतिहास मार्गदर्शिका या समाज में चर्च की भूमिका पर अकादमिक अवलोकनजैसे विशिष्ट संसाधनों से परामर्श कर सकते हैं ।

मध्ययुगीन तकनीकी नवाचारों—जैसे भारी हल, चरखा और बारूद—ने कृषि और हस्तशिल्प की पैदावार में ज़बरदस्त वृद्धि की। इस अधिशेष ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को बदल दिया, निर्वाह कृषि को सशक्त व्यापार और वाणिज्य नेटवर्क में परिवर्तित कर दिया और विशिष्ट शहरी केंद्रों और हलचल भरे बाज़ार कस्बों के विकास को गति प्रदान की।

**तकनीकी नवाचार**

मध्ययुग में व्यावहारिक आविष्कारों में भारी वृद्धि देखी गई, जिसने पूर्व और पश्चिम दोनों को मौलिक रूप से बदल दिया:

- **कृषि एवं उत्पादन:** भारी हल और तीन-खेतों वाली फसल चक्र प्रणाली को अपनाने से पूरे यूरोप में कृषि पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। एशिया में,*समकोण गियरिंग वाले*जल-चक्र ( अरघट्टा *या* साकिया ) ने सिंचाई में क्रांति ला दी।
- **यंत्रीकरण:** चरखे और ऊर्ध्वाधर पवनचक्की जैसे नवाचारों ने अनगिनत घंटों के मैनुअल श्रम की बचत की, जिससे कपड़ा उत्पादन और अनाज पीसने को बढ़ावा मिला।
- **नौवहन और सैन्य व्यवस्था:** चुंबकीय कम्पास, एस्ट्रोलैब और रकाब के आविष्कार ने लंबी दूरी की यात्रा, व्यापार, रसद और युद्ध में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिए। बाद में, बारूद के आविष्कार ने सामाजिक संरचनाओं और क्षेत्रीय सुरक्षा को भी नया रूप दिया।

**व्यापार और वाणिज्य**

जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी में सुधार हुआ, वस्तु विनिमय प्रणाली की जगह धीरे-धीरे मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्थाओं ने ले ली, जिससे बड़े पैमाने पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संभव हो सका।

- **वैश्विक मार्ग:** रेशम मार्ग जैसे समृद्ध भूमि और समुद्री नेटवर्क ने पूर्व और पश्चिम को जोड़ा। भारतीय उपमहाद्वीप जैसे क्षेत्र उच्च मांग वाले वस्त्र (जैसे बंगाल का उत्तम कपास), रेशम और मसाले निर्यात करते थे, जिनके बदले में उन्हें सोना और घोड़े मिलते थे।
- **वाणिज्यिक उपकरण:** विशिष्ट व्यापारी संघ और व्यापारिक संघ उभरे (जैसे यूरोप में हंसेटिक लीग), जबकि *हुंडी* (विनिमय बिल) जैसी बैंकिंग प्रणालियों ने विशाल दूरियों में व्यापार करना सुरक्षित और कुशल बना दिया।

**शहरी केंद्र**

कृषि उत्पादकता में वृद्धि और वाणिज्यिक व्यापार के विस्तार के परस्पर संबंध के परिणामस्वरूप कस्बों और शहरों का तीव्र विकास हुआ।

- **बाजार नेटवर्क:** छोटे स्थानीय मेले के मैदान (जैसे *भारत के दक्कन क्षेत्र में*मंडपिका *और* पेंथा ) बड़े शहरी केंद्रों और बंदरगाह शहरों से जुड़े हुए थे।
- **यूरोपीय शहर:** वेनिस और जेनोआ जैसे इतालवी शहर भूमध्य सागर और बीजान्टिन पूर्व को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में उभरे, जिन्होंने प्रारंभिक बैंकिंग और पूंजीवादी प्रथाओं की नींव रखी।

## Unit 2

स्लाम-पूर्व अरब में जनजातीय समाज था जिसे *जाहिलिया* (अज्ञानता का युग) के नाम से जाना जाता है। यह बहुदेववाद से भरपूर था, जिसमें जनजातियाँ मक्का में काबा में स्थापित विभिन्न मूर्तियों की पूजा करती थीं, साथ ही व्यापक सामाजिक असमानताएँ, रक्तपात और कबीले-आधारित निष्ठाएँ भी व्याप्त थीं।

**इस्लाम-पूर्व अरब**

- **समाज:** खानाबदोश जनजातियों और स्थायी व्यापारी समुदायों द्वारा संगठित। व्यापार मार्ग मक्का जैसे शहरों की जीवनरेखा थे।
- **धर्म:** मुख्यतः बहुदेववादी (मूर्ति पूजा), हालांकि यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के कुछ अंश भी मौजूद थे।
- **सामाजिक संरचना:** सम्मान, जनजातीय गठबंधनों और पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों द्वारा शासित, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर हिंसा और कमजोर वर्ग का हाशिए पर चले जाना होता है।

**पैगंबर मुहम्मद का जीवन**

- **प्रारंभिक जीवन:** लगभग 570 ईस्वी में मक्का में जन्मे, वे कम उम्र में ही अनाथ हो गए थे। उन्होंने एक व्यापारी और चरवाहे के रूप में काम किया और *अल-अमीन* (विश्वसनीय) के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- **पैगंबरी:** 40 वर्ष की आयु में, उन्हें प्रधान देवदूत गेब्रियल के माध्यम से ईश्वर (अल्लाह) से पहली रहस्योद्घाटन प्राप्त हुई। उन्होंने पूर्ण एकेश्वरवाद का प्रचार किया और मक्का में भीषण उत्पीड़न का सामना किया।
- **हिज्राह (प्रवासन):** 622 ईस्वी में, हत्या से बचने के लिए, वह और उनके अनुयायी मदीना चले गए, जहाँ उन्होंने पहले इस्लामी राज्य की स्थापना की और आपस में लड़ रहे कबीलों को एकजुट किया।
- **अंतिम वर्ष:** उन्होंने 630 ईस्वी में शांतिपूर्वक मक्का पर विजय प्राप्त की और अरब प्रायद्वीप को इस्लाम के अंतर्गत एकजुट किया। उनका निधन 632 ईस्वी में 63 वर्ष की आयु में हुआ।

**मुख्य शिक्षाएँ**

- **एकेश्वरवाद (तौहीद):** ईश्वर की एकता में पूर्ण विश्वास, मूर्तिपूजा और बहुदेववाद के सभी रूपों का खंडन।
- **इस्लाम के पांच स्तंभ:** इस्लाम के मूलभूत अभ्यास: आस्था की घोषणा (शहादा), नमाज़ (सलाह), दान (ज़कात), रोज़ा (सॉम) और मक्का की तीर्थयात्रा (हज)।
- **सामाजिक न्याय:** सूदखोरी, शिशुहत्या और उत्पीड़न के खिलाफ सख्त प्रतिबंध; दान, अनाथों की देखभाल और महिलाओं के अधिकारों पर विशेष जोर।
- **समानता:** यह शिक्षा कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं, चाहे उनकी जाति, वर्ग या नस्ल कुछ भी हो।
- **नैतिकता और चरित्र:** सत्यनिष्ठा, पड़ोसियों के प्रति दयालुता, वादों का सम्मान और विजय में भी क्षमा करने पर जोर।

इस्लाम में राज्य निर्माण तीन अलग-अलग चरणों में विकसित हुआ: पैगंबर मुहम्मद के अधीन प्रारंभिक राजव्यवस्था की स्थापना, पवित्र खिलाफत और उमय्यद काल के दौरान इसका विस्तार और एक साम्राज्य में केंद्रीकरण, और अब्बासिद खिलाफत के तहत बौद्धिक और सांस्कृतिक उत्कर्ष।

इन महत्वपूर्ण युगों में राज्य की संरचना और शासन व्यवस्था में किस प्रकार परिवर्तन आए, इसका विवरण इस प्रकार है:

**1. पैगंबर मुहम्मद के अधीन प्रारंभिक राज्य (622-632 ईस्वी)**

इस्लामी राज्य की नींव *622 ईस्वी में मदीना में हिजरत* (प्रवासन) के साथ पड़ी, जो इस्लामी कैलेंडर की शुरुआत का प्रतीक है।

- **मदीना का संविधान:** मुहम्मद ने एक मूलभूत संधि का मसौदा तैयार किया जिसने शहर की विभिन्न युद्धरत जनजातियों को एक एकीकृत संघ ( *उम्माह*) में एकजुट किया।
- **संरचना:** इसने मुहम्मद को सर्वोच्च राजनीतिक मध्यस्थ और धार्मिक नेता के रूप में स्थापित किया, जो दैवीय कानून (शरिया) द्वारा शासित एक धर्मतांत्रिक नगर-राज्य के रूप में कार्य करता था।

**2. पवित्र खिलाफत (राशिदुन खिलाफत) (632-661 ईस्वी)**

पैगंबर की मृत्यु के बाद, समुदाय का नेतृत्व पहले चार "सही राह पर चलने वाले" खलीफाओं (अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली) ने किया।

- **क्षेत्रीय विस्तार:** यह राज्य एक प्रायद्वीपीय शक्ति से एक विशाल साम्राज्य में परिवर्तित हो गया, जिसने कमजोर हो चुके बीजान्टिन और ससानियन (फारसी) साम्राज्यों से तेजी से क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।
- **शासन प्रणाली:** प्रारंभ में एक केंद्रीकृत जनजातीय परिषद ( *शूरा*) और सैन्य छावनी शहरों के माध्यम से प्रशासित की जाती थी, जिनका नेतृत्व राज्यपाल (*अमीर*) करते थे, जो कर संग्रह और रक्षा के लिए जिम्मेदार थे।

**3. उमय्यद खिलाफत (661-750 ईस्वी)**

प्रथम गृहयुद्ध (*फ़ितना*) के बाद स्थापित इस राजवंश ने राजधानी को दमिश्क में स्थानांतरित कर दिया और इस्लामी समुदाय को एक वंशवादी, केंद्रीकृत साम्राज्य में बदल दिया।

- **प्रशासनिक केंद्रीकरण:** उमय्यदों ने स्थानीय बीजान्टिन और फारसी प्रशासनिक तंत्र का उपयोग किया, मानकीकृत मुद्रा (दीनार) की शुरुआत की, एक डाक प्रणाली स्थापित की और अरबी को आधिकारिक राज्य भाषा बनाया।
- **सामाजिक स्तरीकरण:** राज्य एक अरब-केंद्रित अभिजात वर्ग के रूप में कार्य करता था, जो सीरियाई जनजातीय सैनिकों पर अत्यधिक निर्भर था। इससे गैर-अरब मुसलमानों ( *मावली*) की बढ़ती आबादी के साथ सामाजिक तनाव उत्पन्न हुआ।

**4. अब्बासिद खिलाफत (750-1258 ईस्वी)**

उमय्यदों को पराजित करने के बाद, अब्बासिदों ने राजधानी को पूर्व की ओर बगदाद स्थानांतरित कर दिया। यह युग एक अरब सैन्य राज्य से एक महानगरीय, नौकरशाही साम्राज्य में परिवर्तन का प्रतीक था।

- **शासन और नौकरशाही:** उन्होंने एक प्रधानमंत्री (*वज़ीर*) के नेतृत्व में एक परिष्कृत प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना की, साथ ही विशेष विभागों (*दीवान*) और एक सर्वोच्च न्यायाधीश (*काज़ी*) के नेतृत्व में एक सशक्त न्यायपालिका की भी स्थापना की।
- **विश्वव्यापी एकीकरण:** सत्ता का विकेंद्रीकरण विशुद्ध अरब प्रभुत्व से मुक्त होकर हुआ, जिसमें फ़ारसी नौकरशाहों की व्यापक भूमिका रही और विविध संस्कृतियों का एकीकरण हुआ। इस काल ने "इस्लामी स्वर्ण युग" को जन्म दिया, जो अभूतपूर्व बौद्धिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उत्कर्ष से परिपूर्ण था।

प्रारंभिक खिलाफत से अब्बासिद साम्राज्य (750-1258 ईस्वी) में संक्रमण काल ने इस्लामी स्वर्ण युग को चिह्नित किया। राजधानी को बगदाद स्थानांतरित करके, अब्बासिदों ने सत्ता को एक बहुसांस्कृतिक, फारसी-प्रभावित नौकरशाही की ओर स्थानांतरित कर दिया। इस युग ने अभूतपूर्व आर्थिक समृद्धि, कृषि में महत्वपूर्ण प्रगति और प्रारंभिक वैश्विक बैंकिंग नवाचारों को बढ़ावा दिया।

### 🏙️ सामाजिक परिवर्तन: अरब अभिजात वर्ग से विश्ववाद की ओर

- **मावली एकीकरण:** अब्बासिद क्रांति ने अरब अभिजात वर्ग के अनन्य प्रभुत्व को समाप्त कर दिया, और गैर-अरब धर्मान्तरितों (मावली) को सरकार और सैन्य नेतृत्व में पूरी तरह से एकीकृत कर दिया।
- **बगदाद का उदय:** बगदाद तेजी से विकसित होकर दुनिया के सबसे बड़े और सबसे जटिल शहरी केंद्रों में से एक बन गया, और अपने चरम पर इसकी आबादी लगभग दस लाख लोगों की थी, जो विविधतापूर्ण थी।
- **सामाजिक गतिशीलता:** उस समय पश्चिमी यूरोप के कई हिस्सों के विपरीत, साधारण पृष्ठभूमि के व्यक्ति विद्वान, कवि या नौकरशाह के रूप में प्रमुख पदों तक पहुंच सकते थे।
- **सांस्कृतिक मिश्रण:** इस समाज में अरबी, फारसी और मध्य एशियाई परंपराओं का सहज मिश्रण देखने को मिलता था, जिससे एक समृद्ध बौद्धिक वातावरण का निर्माण हुआ।
- **महिलाओं की भूमिकाएँ:** धनी परिवारों की महिलाएं अक्सर अलग घरेलू कमरों में एकांत में रहती थीं, फिर भी वे शाही दरबार में प्रभाव डालती थीं और कभी-कभी कविता और कलाओं में शिक्षा प्राप्त करती थीं।

### 💰 आर्थिक उछाल: व्यापार, नवाचार और वित्त

- **वैश्विक व्यापार केंद्र:** अब्बासिदों का रेशम मार्ग और समुद्री मार्गों तक फैले महत्वपूर्ण व्यापार नेटवर्क पर नियंत्रण था। रेशम, कागज और मसालों जैसी वस्तुओं का एशिया, अफ्रीका और यूरोप के बीच निर्बाध रूप से आवागमन होता था।
- **प्रारंभिक वित्तीय साधन:** खिलाफत को अक्सर आधुनिक वित्त का उद्गम स्थल माना जाता है। व्यापारियों ने धन को सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करने के लिए उन्नत तंत्र विकसित किए, जिनमें चेक (*साफ्ट*) के प्रारंभिक रूप, साख पत्र और बगदाद से मोरक्को तक फैले बैंकिंग नेटवर्क शामिल थे।
- **कृषि क्रांति:** साम्राज्य ने नई फसलों (जैसे चावल, कपास और गन्ना) की शुरुआत और खेती करके तथा उन्नत सिंचाई प्रणालियों का विस्तार करके कृषि क्षेत्र में तेजी से विकास को बढ़ावा दिया।
- **शिल्प और संघ:** कारीगर विशेष बाजारों (सुक) में फले-फूले और यात्रियों, अनाथों और स्कूलों की देखभाल के लिए पश्चिमी संघों के समान पारस्परिक लाभ वाली समितियाँ बनाईं।
- **कल्याणकारी राज्य की अवधारणाएँ:** खिलाफत इतिहास के सबसे प्रारंभिक कल्याणकारी राज्यों में से एक के रूप में कार्य करती थी। करों (जैसे *ज़कात* और *जिज़्या*) से प्राप्त राजस्व से गरीबों, बुजुर्गों और विकलांगों का भरण-पोषण किया जाता था, जबकि प्रमुख शहरों में सार्वजनिक अस्पताल (*बीमारिस्तान*) स्थापित किए गए थे।

  स्लामी सभ्यता ने 8वीं से 14वीं शताब्दी तक फैले अपने कालखंड के माध्यम से आधुनिक विश्व में मूलभूत योगदान दिया। पूर्व के ज्ञान का अनुवाद, संश्लेषण और विस्तार करके, मुस्लिम विद्वानों ने वैश्विक विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन में क्रांति ला दी, जिससे अंततः यूरोपीय पुनर्जागरण की शुरुआत हुई।

🔬 **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**

- **प्रकाशिकी:** विद्वान इब्न अल-हयथम (अलहज़ेन) ने प्रकाशिकी के आधुनिक विज्ञान की स्थापना की और यह सिद्ध किया कि दृष्टि तब उत्पन्न होती है जब प्रकाश वस्तुओं से परावर्तित होकर आंख में प्रवेश करता है।
- **खगोल विज्ञान:** खगोलविदों ने उन्नत वेधशालाओं का निर्माण किया और एस्ट्रोलैब जैसे उपकरणों का विकास किया, जिससे तारों का मानचित्रण हुआ और सटीक नेविगेशन संभव हो सका।
- **यांत्रिकी और अभियांत्रिकी:** अल-जज़ारी जैसे व्यक्तियों ने प्रारंभिक रोबोटिक्स, क्रैंकशाफ्ट और उन्नत जल-उठाने वाले उपकरणों का आविष्कार किया, जिससे आधुनिक यांत्रिक अभियांत्रिकी की नींव पड़ी।

➕ **गणित**

- **बीजगणित:** गणितज्ञ अल-ख्वारिज्मी ने बीजगणित (अरबी शब्द *अल-जबर*से ) का सूत्रीकरण किया, जिससे गणित में मौलिक परिवर्तन आया।

- **अरबी अंक:** इस्लामी विद्वानों ने अंक प्रणाली (शून्य की अवधारणा सहित) को अपनाया और लोकप्रिय बनाया, जो आज वैश्विक मानक है।

🏥 **चिकित्सा**

- **अस्पताल:** इस्लामी सभ्यता ने आधुनिक अस्पताल प्रणाली की शुरुआत की, जिसमें वार्ड, शिक्षण सुविधाएं और फार्मेसियां शामिल थीं।
- **औषध विज्ञान:** अल-राज़ी और इब्न सिना (एविसेना) जैसे विद्वानों ने सैकड़ों दवाओं का दस्तावेजीकरण किया, जिससे नैदानिक परीक्षणों और चिकित्सा नैतिकता के लिए प्रारंभिक मानक स्थापित हुए।
- **चिकित्सा का कैनन:** इब्न सिना का चिकित्सा विश्वकोश सदियों तक यूरोपीय विश्वविद्यालयों में प्राथमिक पाठ्यपुस्तक के रूप में कार्य करता रहा।
- 🏛️ **दर्शनशास्त्र, साहित्य और भूगोल**
- **विश्वविद्यालय:** डिग्री प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय की अवधारणा की शुरुआत इस्लामी दुनिया में हुई थी (उदाहरण के लिए, अल-क़राविइयन विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना 859 ईस्वी में हुई थी)।
- **वैज्ञानिक पद्धति:** विद्वानों ने वैज्ञानिक अध्ययन के महत्वपूर्ण तत्वों के रूप में कठोर अनुभवजन्य अवलोकन और प्रयोग को प्रस्तुत किया।
- **वैश्विक मानचित्रण:** इब्न बतूता जैसे खोजकर्ताओं और अल-इदरीसी जैसे भूगोलवेत्ताओं ने वैश्विक भूगोल की समझ को आगे बढ़ाया और व्यापक व्यापार मार्गों का मानचित्रण किया।

## Unit 3

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत (लगभग 600-1200 ईस्वी) प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास को विभाजित करने वाला संक्रमणकालीन चरणहै । यह गुप्त साम्राज्यों जैसे केंद्रीकृत साम्राज्यों के पतन और क्षेत्रीय राज्यों के उदय का प्रतीक था। इस परिवर्तन ने उपमहाद्वीप की राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति को गहराई से बदल दिया।

**परिवर्तन की प्रमुख गतिशीलता**

- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण (भारतीय सामंतवाद):**विशाल साम्राज्य छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों में विभाजित हो गए। राजाओं ने सैन्य सहायता और राजस्व संग्रह के बदले *ब्राह्मणों, मंदिरों और सामंतों (*सामंतों ) को भूमि के बड़े-बड़े हिस्से प्रदान किए।
- **अर्थव्यवस्था का ग्रामीणकरण:** लंबी दूरी और समुद्री व्यापार में गिरावट आई। परिणामस्वरूप, अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से भूमि आधारित और स्थानीयकृत हो गई, जिससे कई शहरी केंद्रों का पतन हुआ।
- **सामाजिक स्तरीकरण:** भूमि अनुदानों में वृद्धि के साथ, ग्रामीण श्रमिक और किसान अक्सर भूमि से बंध जाते थे। साथ ही,*आदिवासी और प्रवासी समूहों के मौजूदा जाति व्यवस्था में एकीकृत होने के कारण*नई जातियाँ और उप-जातियाँ ( जातियाँ ) तेजी से बढ़ने लगीं।
- **क्षेत्रीय पहचान और कला:** विशिष्ट क्षेत्रीय संस्कृतियाँ, स्थानीय भाषाएँ और स्थापत्य शैलियाँ फलने-फूलने लगीं। मंदिर मात्र पूजा स्थलों के बजाय प्रमुख प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक केंद्रों के रूप में उभरे।
- **भक्ति आंदोलन:** धार्मिक प्रथाएं जटिल वैदिक अनुष्ठानों से हटकर भावनात्मक, व्यक्तिगत भक्ति (*भक्ति*) की ओर स्थानांतरित हो गईं। इस काल में बौद्ध धर्म का धीरे-धीरे पतन और हिंदू धर्म का पुनरुत्थान भी देखा गया।

**प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियाँ**

- **उत्तरी भारत में:**उस युग में कन्नौज पर नियंत्रण के लिए गुर्जर-प्रतिहारों**,** बंगाल के पालों **और** दक्कन के**राष्ट्रकूटों** के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष का बोलबाला था ।
- **दक्षिण भारत में:**सत्ता पल्लवों**,** चालुक्यों**और** पांड्यों **जैसे क्षेत्रीय राजवंशों के इर्द-गिर्द केंद्रित थी** ।

भारत में तुर्कों का आगमन, जो 11वीं शताब्दी में महमूद गजनी के आक्रमणों से लेकर 12वीं शताब्दी में मुहम्मद गोरी की विजयों तक फैला हुआ था, एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसने मध्ययुग की शुरुआत की और उपमहाद्वीप के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया।

**1. राजनीतिक परिवर्तन**

- **दिल्ली सल्तनत की स्थापना:** खंडित राजपूत राज्यों की जगह तुर्कों ने 1206 में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की, जिससे उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर सत्ता का केंद्रीकरण हो गया।
- **नया प्रशासन:** उन्होंने फारसी और इस्लामी प्रथाओं का उपयोग करते हुए एक केंद्रीकृत प्रशासन और शासन की एक नई प्रणाली शुरू की। [1]
- **इक्ता प्रणाली:** सुल्तानों ने *इक्ता* प्रणाली लागू की, जिसके तहत सैन्य नेताओं को सेवा और राजस्व संग्रह के बदले भूमि आवंटन किया जाता था, जिससे सैन्य तत्परता और केंद्रीकृत नियंत्रण को मजबूती मिली।

**2. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव**

- **सूफीवाद और इस्लाम:** तुर्कों के आगमन ने इस्लाम और सूफी रहस्यवाद के प्रसार को सुगम बनाया। सूफी संतों ने सार्वभौमिक भाईचारे का उपदेश दिया और विभिन्न समुदायों के बीच की खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **सांस्कृतिक संश्लेषण:** फारसी, अरबी और स्वदेशी भारतीय परंपराओं के मेल से एक नई भारत-इस्लामी संस्कृति का जन्म हुआ। यह भाषा (फारसी दरबारी भाषा बन गई), सामाजिक रीति-रिवाजों और पहनावे में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।
- **जाति व्यवस्था में परिवर्तन:** कठोर जाति व्यवस्था को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। तुर्कों द्वारा क्षत्रिय समुदाय से बाहर के योद्धाओं और नौकरशाहों की भर्ती करने से युद्ध पर पारंपरिक एकाधिकार टूट गया, जिससे सामाजिक गतिशीलता के अधिक अवसर मिले।
-

**3. वास्तुकला एवं प्रौद्योगिकी**

- **भारत-इस्लामी वास्तुकला:** तुर्कों ने मेहराब, गुंबद, मीनारें और मोर्टार के उपयोग जैसे नवीन वास्तुशिल्पीय तत्वों का परिचय दिया। इस समन्वय से जटिल भारतीय नक्काशी और इस्लामी ज्यामिति से सुसज्जित प्रतिष्ठित स्मारक निर्मित हुए (उदाहरण के लिए, कुतुब मीनार परिसर)।
- **कागज प्रौद्योगिकी:** तुर्कों ने भारत में कागज के उपयोग की शुरुआत की, जिससे प्रशासन, अभिलेख-संरक्षण और साहित्य उत्पादन की दक्षता में आमूलचूल सुधार हुआ।

**4. आर्थिक प्रभाव**

- **शहरीकरण:** सरकार के केंद्रीकरण ने शहरी केंद्रों के विकास को प्रोत्साहित किया और मध्य और पश्चिम एशिया में फलते-फूलते व्यापार मार्गों को बढ़ावा दिया, जिससे भारत की आंतरिक और बाहरी समृद्धि में वृद्धि हुई।

- **विनाश और लूटपाट:** शुरुआती हमलों - विशेष रूप से महमूद गजनी द्वारा मथुरा, कन्नौज और सोमनाथ जैसे मंदिर-नगरों को निशाना बनाकर किए गए हमलों - के परिणामस्वरूप भारी मात्रा में धन की लूट और महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों का विनाश हुआ, जिसने उस समय स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को गहराई से प्रभावित किया।

**5. सैन्य सुधार**

- **तकनीकी प्रगति:** तुर्की सेना ने भारत में उन्नत घुड़सवार युद्ध कला का परिचय कराया और लोहे के रकाब को भारत में लागू किया। वे कुशल घुड़सवार तीरंदाजों पर अत्यधिक निर्भर थे, जिसने उपमहाद्वीप में युद्धों की प्रकृति को मौलिक रूप से बदल दिया।

मध्यकालीन भारत में राज्य का गठन एक जटिल और क्रमिक प्रक्रिया थी। इसकी शुरुआत ब्राह्मणवादी और सामंती व्यवस्थाओं द्वारा शासित विकेंद्रीकृत, क्षेत्रीय कृषि विस्तार से हुई, जो बाद में दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य जैसे अत्यधिक केंद्रीकृत, नौकरशाही इस्लामी साम्राज्यों में परिवर्तित हो गई। मध्ययुग के दौरान (लगभग 8वीं से 18वीं शताब्दी तक) राज्य निर्माण और प्रशासन का विकास चार मुख्य स्तंभों पर आधारित था:

**1. राज्य की प्रकृति**

मध्यकालीन भारतीय शासन प्रणाली मुख्य रूप से राजशाही थी, लेकिन समय के साथ इसके स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। इतिहासकार आमतौर पर इसे दो व्यापक चरणों में वर्गीकृत करते हैं:

- **प्रारंभिक मध्यकालीन राज्य (लगभग 750-1200 ईस्वी):** केंद्रीकृत एकाधिकार के बजाय, प्रारंभिक राज्य (जैसे पाल, प्रतिहार और चोल) अत्यधिक विकेंद्रीकृत थे। इतिहासकार इस प्रणाली की प्रकृति पर बहस करते हैं—कुछ इसे **भूमि अनुदान और आत्मनिर्भर स्थानीय अर्थव्यवस्था द्वारा चिह्नित** भारतीय सामंतवाद**मॉडल के रूप में देखते हैं, जबकि अन्य एक खंडित राज्य** मॉडल (बर्टन स्टीन द्वारा प्रचारित) का प्रस्ताव करते हैं, जहां एक मुख्य क्षेत्र का सीधा प्रशासन होता था, और परिधीय क्षेत्रों को सापेक्ष स्वायत्तता प्राप्त थी।
- **सल्तनत और मुगल साम्राज्य (लगभग 1206-1707 ईस्वी):** ये अत्यधिक केंद्रीकृत, नौकरशाही साम्राज्य थे जिनकी सैन्य नींव मजबूत थी। प्रारंभिक व्याख्याओं में दिल्ली सल्तनत को "धर्मतंत्र" कहा गया, जबकि बाद के विद्वानों ने इसे इस्लामी कानूनी ढाँचे (शरिया) और व्यावहारिक भारत-इस्लामी राजनीतिक आवश्यकताओं के मेल के रूप में मान्यता दी, जिससे एक विविध प्रशासनिक तंत्र का विकास संभव हुआ।

**2. संप्रभुता**

सर्वोच्च सत्ता की अवधारणा में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए:

- **दैवीय अधिकार और अनुष्ठानिक राजत्व:** प्रारंभिक मध्ययुगीन और क्षेत्रीय राज्यों में, राजा (जैसे राजपूत या चोल) पौराणिक नायकों से वंश का दावा करके या दैवीय स्वीकृति प्राप्त करके संप्रभु शक्ति अर्जित करते थे। यह अक्सर विस्तृत वैदिक अनुष्ठानों, मंदिर निर्माण और ब्राह्मणों को उदार भूमि अनुदान के माध्यम से सुदृढ़ किया जाता था।
- **सल्तनत की संप्रभुता:** सुल्तानों ने प्रारंभ में दूरस्थ खलीफा के अधीन शासन किया, लेकिन बाद में उन्होंने *पूर्ण, अविभाज्य शक्ति को वैधता प्रदान करने के लिए*राजसी फारसी उपाधियाँ (जैसे, ज़िल्ल-इ-ल्लाह या "ईश्वर की छाया") अपनाईं।
- **मुगल संप्रभुता:** मुगलों ने समावेशी संप्रभुता का एक अत्यंत परिष्कृत सिद्धांत विकसित किया। *सुलह-ए-कुल* (सार्वभौमिक शांति/सहिष्णुता) की अवधारणा को अपनाकर और फारसी अवधारणा *फर्र-ए-इज़ादी* (राजत्व का दिव्य प्रकाश) को रूपांतरित करके, राज्य ने विभिन्न धार्मिक और जातीय समूहों को एक एकल शाही पहचान में एकीकृत किया।

**3. वैधता**

अपनी प्रजा की आज्ञाकारिता सुनिश्चित करने के लिए, मध्ययुगीन शासकों ने अपने शासन को वैधता प्रदान करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का इस्तेमाल किया:

- **संरक्षण और सार्वजनिक निर्माण कार्य:** शासकों ने अपनी शक्ति, धन और धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए स्मारकीय वास्तुकला (जैसे ताजमहल, कुतुब मीनार, या दक्षिण भारत के विशाल मंदिर) का निर्माण करवाया।
- **धार्मिक और कानूनी अधिकार:** सल्तनत और मुगल शासकों ने सूफी संतों, उलेमाओं और हिंदू विद्वानों को संरक्षण दिया। अकबर ने *धार्मिक विवादों में अंतिम मध्यस्थता का अधिकार ग्रहण करने के लिए महजर* (अचूकता फरमान) की स्थापना की, जिससे सभी प्रजा के निष्पक्ष संरक्षक के रूप में राज्य की भूमिका सुदृढ़ हुई।
- **स्थानीय एकीकरण:**अधीनस्थ प्रमुखों, राजाओं और स्थानीय अभिजात वर्ग को अक्सर जमींदार *या* मनसबदार *के रूप में शाही प्रशासनिक संरचना में आत्मसात कर लिया जाता था* , जिससे स्थानीय सत्ता के आधार केंद्रीय सत्ता से जुड़ जाते थे।

**4. प्रशासन**

शासन व्यवस्था स्तरित नौकरशाही तंत्र पर आधारित थी जो विशाल क्षेत्रों के प्रबंधन के लिए विकसित हुई थी:

- **राजस्व और कृषि प्रणाली:** प्रशासन की रीढ़ कृषि अधिशेष का निष्कर्षण था। दिल्ली सल्तनत ने **इक्तादारी प्रणाली** (सेवा के बदले सैन्य अधिकारियों को भू-राजस्व आवंटित करना) शुरू की। यह प्रणाली मुगलों के शासनकाल में विकसित होकर मजबूत **ज़ब्ती** और **मनसबदारी प्रणालियों** में तब्दील हो गई , जिन्होंने फसल की पैदावार और भूमि के वर्गीकरण के आधार पर भू-राजस्व निर्धारण को मानकीकृत किया।
- **केंद्रीय और प्रांतीय विभाजन:** केंद्र में, सुल्तान/सम्राट को *वज़ीर* (वित्त/प्रधानमंत्री) और *मीर बख्शी* (सैन्य मंत्री) जैसे प्रमुख मंत्रियों का सहयोग प्राप्त था। साम्राज्य को प्रांतों (*सूबाओं*) में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे सरकार *(जिलों) और* परगना*(उप-जिलों) में विभाजित किया गया था* । सूबेदार *(गवर्नर) और* फौजदार *(प्रशासनिक/सैन्य कमांडर) जैसे अधिकारी* कानून और व्यवस्था बनाए रखते थे।
- **न्याय और पुलिस:** काज़ी *मुसलमानों के लिए इस्लामी कानून और गैर-मुसलमानों के लिए प्रथागत/स्थानीय कानूनों के आधार पर न्यायिक प्रणाली का संचालन करते थे। स्थानीय स्तर पर,* कस्बों में कोतवाल *पुलिस प्रमुख के रूप में कार्य करते थे और* नगरपालिका कानून, व्यवस्था और नैतिकता को बनाए रखते थे।

मध्यकालीन भारत में शहरीकरण एक गतिशील प्रक्रिया थी जो राजनीतिक केंद्रीकरण, विस्तारित कृषि अर्थव्यवस्थाओं और बढ़ते व्यापार नेटवर्क द्वारा संचालित थी। प्राचीन शहरी मॉडलों के विपरीत, मध्यकालीन शहर विविध प्रशासनिक, वाणिज्यिक और धार्मिक केंद्रों के रूप में फले-फूले - जैसे आगरा, दिल्ली और दक्षिण के मंदिर नगर - जहाँ एक विशिष्ट, गैर-कृषि समाज का विकास हुआ।

मध्यकाल के दौरान कस्बों और शहरों के विस्तार को चार मुख्य कारकों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

**1. प्रशासनिक और सैन्य राजधानियाँ**

- **साम्राज्यवादी विकास:** दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य की स्थापना सत्ता और राजस्व प्रशासन के लिए शहरीकरण पर बहुत हद तक निर्भर थी।
- **गैरीसन टाउन (*क़सबास*):** शासकों ने स्थानीय स्तर पर किलेबंद चौकियाँ स्थापित कीं जो क्षेत्रीय प्रशासनिक केंद्रों में विकसित हुईं, जिससे सैन्य नियंत्रण और कृषि करों के संग्रह में सुविधा हुई।
- **प्रमुख उदाहरण:** आगरा, दिल्ली और दौलताबाद जैसे शहर भव्य राजधानियों के रूप में उभरे, जिन्होंने कारीगरों, कुलीनों और प्रशासकों की बड़ी आबादी को आकर्षित किया।

**2. वाणिज्यिक और बाजार केंद्र**

- **मुद्रीकरण:** सिक्कों और विनिमय पत्रों (*हुंडी*) के व्यापक प्रचलन ने गहन आर्थिक एकीकरण और जीवंत शहरी शिल्प अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दिया।]
- **बंदरगाह शहर:** हिंद महासागर के व्यापार नेटवर्क के विस्तार के कारण तटीय शहरों का विकास हुआ और वे वैश्विक वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु बन गए।
- **प्रमुख उदाहरण:** सूरत, ब्रोच और कैम्बे घनी आबादी वाले व्यापारिक केंद्र थे जहां कारीगर वैश्विक निर्यात के लिए वस्त्र, कालीन और धातु के सामान जैसे विलासितापूर्ण शिल्प का उत्पादन करते थे।

**3. धार्मिक और मंदिर वाले शहर**

- **राजसी संरक्षण:** दक्षिण भारत में (उदाहरण के लिए, चोल राजवंश के तहत), ग्रामीण गाँव विशाल शहरी केंद्रों में परिवर्तित हो गए क्योंकि राजाओं ने अपनी शक्ति को वैधता प्रदान करने के लिए बड़े मंदिरों का उपयोग किया।
- **तीर्थयात्रा केंद्र:** पवित्र स्थल स्वाभाविक रूप से श्रद्धालुओं को आकर्षित करते थे, जिससे लगातार स्थानीय और लंबी दूरी के व्यापार मार्ग स्थापित होते थे।
- **प्रमुख उदाहरण:** मदुरै, कांचीपुरम और तिरुपति जैसे केंद्रों में तीर्थयात्री अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए स्थायी आवासीय और व्यापारिक क्वार्टरों के साथ विशाल मंदिर परिसर विकसित किए गए।

**4. शिल्प उत्पादन और औद्योगिक केंद्र**

- **विशेषज्ञता:** विशिष्ट स्थानीय वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध स्थान महत्वपूर्ण विनिर्माण केंद्रों में विकसित हुए।
- **प्रमुख उदाहरण:** बिदर अपने विशिष्ट धातु शिल्प (बिदरीवेयर) के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हो गया, जिससे इस क्षेत्र में कुशल श्रमिक और अपार धन आकर्षित हुआ।

# Unit4

मध्ययुगीन यूरोपीय व्यापार मार्गों ने स्थानीय कृषि क्षेत्रों को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ा, जिससे धन का प्रवाह बढ़ते शहरी केंद्रों की ओर हुआ। अर्थव्यवस्था पर समुद्री संघों का प्रभुत्व था—उत्तर में हंसेटिक संघ और दक्षिण में इतालवी नगर-राज्य—जबकि अंतर्देशीय मेले और आल्प्स के दर्रे यूरोप को पूर्व से जोड़ते थे।

**1. भूमध्यसागरीय केंद्र और इतालवी नगर-राज्य**

- **वेनिस और जेनोआ:** इन समुद्री गणराज्यों का भूमध्य सागर पार व्यापार पर प्रभुत्व था। उन्होंने धर्मयुद्धों के लिए सैनिकों और आपूर्ति का परिवहन किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने बीजान्टिन साम्राज्य और इस्लामी राज्यों के साथ अत्यधिक लाभदायक व्यापार एकाधिकार स्थापित किए।
- **प्रमुख वस्तुएं:** मसाले, रेशम, कांच के बर्तन और चीनी जो पूर्व से आयात की जाती थीं ( रेशम मार्ग और लाल सागर के माध्यम से)।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** वेनिस, जेनोआ, पीसा और फ्लोरेंस (एक प्रमुख बैंकिंग और कपड़ा केंद्र)।

**2. उत्तरी नेटवर्क और हंसेटिक लीग**

- **हंसा:** व्यापारी संघों और बाज़ार कस्बों का एक शक्तिशाली वाणिज्यिक और रक्षात्मक संघ। इसने बाल्टिक और उत्तरी सागरों में व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया था।
- **प्रमुख वस्तुएं:** पूर्व से लकड़ी, फर, मोम, एम्बर और नमक; पश्चिम से नमकीन हेरिंग, तांबा और अत्यधिक मांग वाले ऊनी कपड़े।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** ल्यूबेक ("हंसा की रानी"), ब्रुग्स (एक प्रमुख पश्चिमी टर्मिनल), डैनज़िग (ग्दान्स्क), और विस्बी।

**3. जमीनी मार्ग और महाद्वीपीय मेले**

- **अल्पाइन दर्रे और नदी घाटियाँ:** भूमि मार्ग से माल की ढुलाई पर्वतीय दर्रों (जैसे, ब्रेनर दर्रा) और राइन और रोन नदियों के माध्यम से की जाती थी, जो उत्तरी इतालवी बंदरगाहों को मध्य और उत्तरी यूरोप से जोड़ती थीं।
- **व्यापार मेले:** केंद्रीकृत क्षेत्रीय बाजार उभरे जहां उत्तरी और दक्षिणी व्यापारी मिलते थे।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** फ्रांस में शैम्पेन मेले और जर्मनी में फ्रैंकफर्ट।

**4. महत्वपूर्ण पश्चिमी और पूर्वी केंद्र**

- **लंदन और पेरिस:** प्रमुख प्रशासनिक और जनसंख्या प्रधान राजधानियाँ जो महाद्वीपीय और अंग्रेजी वस्तुओं के लिए स्थानीय गंतव्य केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं।
- **ब्रुग्स और घेंट:** फ्लेमिश वस्त्रों के प्रमुख विनिर्माण और वितरण केंद्र, जो इंग्लैंड से आयातित कच्चे ऊन को पूरे महाद्वीप के खरीदारों से जोड़ते हैं।
- **नोवगोरोड:** रूस का एक महत्वपूर्ण पूर्वी प्रवेश द्वार शहर जो बाल्टिक व्यापार नेटवर्क को पूर्व की ओर जाने वाले फर और लकड़ी के मार्गों से जोड़ता है।

मध्ययुगीन यूरोपीय व्यापार मार्गों ने स्थानीय कृषि क्षेत्रों को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ा, जिससे धन का प्रवाह बढ़ते शहरी केंद्रों की ओर हुआ। अर्थव्यवस्था पर समुद्री संघों का प्रभुत्व था—उत्तर में हंसेटिक संघ और दक्षिण में इतालवी नगर-राज्य—जबकि अंतर्देशीय मेले और आल्प्स के दर्रे यूरोप को पूर्व से जोड़ते थे।

**1. भूमध्यसागरीय केंद्र और इतालवी नगर-राज्य**

- **वेनिस और जेनोआ:** इन समुद्री गणराज्यों का भूमध्य सागर पार व्यापार पर प्रभुत्व था। उन्होंने धर्मयुद्धों के लिए सैनिकों और आपूर्ति का परिवहन किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने बीजान्टिन साम्राज्य और इस्लामी राज्यों के साथ अत्यधिक लाभदायक व्यापार एकाधिकार स्थापित किए।
- **प्रमुख वस्तुएं:** मसाले, रेशम, कांच के बर्तन और चीनी जो पूर्व से आयात की जाती थीं ( रेशम मार्ग और लाल सागर के माध्यम से)।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** वेनिस, जेनोआ, पीसा और फ्लोरेंस (एक प्रमुख बैंकिंग और कपड़ा केंद्र)।

**2. उत्तरी नेटवर्क और हंसेटिक लीग**

- **हंसा:** व्यापारी संघों और बाज़ार कस्बों का एक शक्तिशाली वाणिज्यिक और रक्षात्मक संघ। इसने बाल्टिक और उत्तरी सागरों में व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया था।

- **प्रमुख वस्तुएं:** पूर्व से लकड़ी, फर, मोम, एम्बर और नमक; पश्चिम से नमकीन हेरिंग, तांबा और अत्यधिक मांग वाले ऊनी कपड़े।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** ल्यूबेक ("हंसा की रानी"), ब्रुग्स (एक प्रमुख पश्चिमी टर्मिनल), डैनज़िग (ग्दान्स्क), और विस्बी।

**3. जमीनी मार्ग और महाद्वीपीय मेले**

- **अल्पाइन दर्रे और नदी घाटियाँ:** भूमि मार्ग से माल की ढुलाई पर्वतीय दर्रों (जैसे, ब्रेनर दर्रा) और राइन और रोन नदियों के माध्यम से की जाती थी, जो उत्तरी इतालवी बंदरगाहों को मध्य और उत्तरी यूरोप से जोड़ती थीं।
- **व्यापार मेले:** केंद्रीकृत क्षेत्रीय बाजार उभरे जहां उत्तरी और दक्षिणी व्यापारी मिलते थे।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** फ्रांस में शैम्पेन मेले और जर्मनी में फ्रैंकफर्ट।

**4. महत्वपूर्ण पश्चिमी और पूर्वी केंद्र**

- **लंदन और पेरिस:** प्रमुख प्रशासनिक और जनसंख्या प्रधान राजधानियाँ जो महाद्वीपीय और अंग्रेजी वस्तुओं के लिए स्थानीय गंतव्य केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं।
- **ब्रुग्स और घेंट:** फ्लेमिश वस्त्रों के प्रमुख विनिर्माण और वितरण केंद्र, जो इंग्लैंड से आयातित कच्चे ऊन को पूरे महाद्वीप के खरीदारों से जोड़ते हैं।
- **नोवगोरोड:** रूस का एक महत्वपूर्ण पूर्वी प्रवेश द्वार शहर जो बाल्टिक व्यापार नेटवर्क को पूर्व की ओर जाने वाले फर और लकड़ी के मार्गों से जोड़ता है।

मध्ययुगीन यूरोपीय व्यापार मार्गों ने स्थानीय कृषि क्षेत्रों को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ा, जिससे धन का प्रवाह बढ़ते शहरी केंद्रों की ओर हुआ। अर्थव्यवस्था पर समुद्री संघों का प्रभुत्व था—उत्तर में हंसेटिक संघ और दक्षिण में इतालवी नगर-राज्य—जबकि अंतर्देशीय मेले और आल्प्स के दर्रे यूरोप को पूर्व से जोड़ते थे।

**1. भूमध्यसागरीय केंद्र और इतालवी नगर-राज्य**

- **वेनिस और जेनोआ:** इन समुद्री गणराज्यों का भूमध्य सागर पार व्यापार पर प्रभुत्व था। उन्होंने धर्मयुद्धों के लिए सैनिकों और आपूर्ति का परिवहन किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने बीजान्टिन साम्राज्य और इस्लामी राज्यों के साथ अत्यधिक लाभदायक व्यापार एकाधिकार स्थापित किए।
- **प्रमुख वस्तुएं:** मसाले, रेशम, कांच के बर्तन और चीनी जो पूर्व से आयात की जाती थीं ( रेशम मार्ग और लाल सागर के माध्यम से)।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** वेनिस, जेनोआ, पीसा और फ्लोरेंस (एक प्रमुख बैंकिंग और कपड़ा केंद्र)।

**2. उत्तरी नेटवर्क और हंसेटिक लीग**

- **हंसा:** व्यापारी संघों और बाज़ार कस्बों का एक शक्तिशाली वाणिज्यिक और रक्षात्मक संघ। इसने बाल्टिक और उत्तरी सागरों में व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया था।
- **प्रमुख वस्तुएं:** पूर्व से लकड़ी, फर, मोम, एम्बर और नमक; पश्चिम से नमकीन हेरिंग, तांबा और अत्यधिक मांग वाले ऊनी कपड़े।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** ल्यूबेक ("हंसा की रानी"), ब्रुग्स (एक प्रमुख पश्चिमी टर्मिनल), डैनज़िग (ग्दान्स्क), और विस्बी।

**3. जमीनी मार्ग और महाद्वीपीय मेले**

- **अल्पाइन दर्रे और नदी घाटियाँ:** भूमि मार्ग से माल की ढुलाई पर्वतीय दर्रों (जैसे, ब्रेनर दर्रा) और राइन और रोन नदियों के माध्यम से की जाती थी, जो उत्तरी इतालवी बंदरगाहों को मध्य और उत्तरी यूरोप से जोड़ती थीं।
- **व्यापार मेले:** केंद्रीकृत क्षेत्रीय बाजार उभरे जहां उत्तरी और दक्षिणी व्यापारी मिलते थे।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** फ्रांस में शैम्पेन मेले और जर्मनी में फ्रैंकफर्ट।

**4. महत्वपूर्ण पश्चिमी और पूर्वी केंद्र**

- **लंदन और पेरिस:** प्रमुख प्रशासनिक और जनसंख्या प्रधान राजधानियाँ जो महाद्वीपीय और अंग्रेजी वस्तुओं के लिए स्थानीय गंतव्य केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं।
- **ब्रुग्स और घेंट:** फ्लेमिश वस्त्रों के प्रमुख विनिर्माण और वितरण केंद्र, जो इंग्लैंड से आयातित कच्चे ऊन को पूरे महाद्वीप के खरीदारों से जोड़ते हैं।
- **नोवगोरोड:** रूस का एक महत्वपूर्ण पूर्वी प्रवेश द्वार शहर जो बाल्टिक व्यापार नेटवर्क को पूर्व की ओर जाने वाले फर और लकड़ी के मार्गों से जोड़ता है।

मध्ययुगीन यूरोपीय व्यापार मार्गों ने स्थानीय कृषि क्षेत्रों को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ा, जिससे धन का प्रवाह बढ़ते शहरी केंद्रों की ओर हुआ। अर्थव्यवस्था पर समुद्री संघों का प्रभुत्व था—उत्तर में हंसेटिक संघ और दक्षिण में इतालवी नगर-राज्य—जबकि अंतर्देशीय मेले और आल्प्स के दर्रे यूरोप को पूर्व से जोड़ते थे।

**1. भूमध्यसागरीय केंद्र और इतालवी नगर-राज्य**

- **वेनिस और जेनोआ:** इन समुद्री गणराज्यों का भूमध्य सागर पार व्यापार पर प्रभुत्व था। उन्होंने धर्मयुद्धों के लिए सैनिकों और आपूर्ति का परिवहन किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने बीजान्टिन साम्राज्य और इस्लामी राज्यों के साथ अत्यधिक लाभदायक व्यापार एकाधिकार स्थापित किए।
- **प्रमुख वस्तुएं:** मसाले, रेशम, कांच के बर्तन और चीनी जो पूर्व से आयात की जाती थीं ( रेशम मार्ग और लाल सागर के माध्यम से)।

- **प्रमुख शहरी केंद्र:** वेनिस, जेनोआ, पीसा और फ्लोरेंस (एक प्रमुख बैंकिंग और कपड़ा केंद्र)।]

**2. उत्तरी नेटवर्क और हंसेटिक लीग**

- **हंसा:** व्यापारी संघों और बाज़ार कस्बों का एक शक्तिशाली वाणिज्यिक और रक्षात्मक संघ। इसने बाल्टिक और उत्तरी सागरों में व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया था।
- **प्रमुख वस्तुएं:** पूर्व से लकड़ी, फर, मोम, एम्बर और नमक; पश्चिम से नमकीन हेरिंग, तांबा और अत्यधिक मांग वाले ऊनी कपड़े।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** ल्यूबेक ("हंसा की रानी"), ब्रुग्स (एक प्रमुख पश्चिमी टर्मिनल), डैनज़िग (ग्दान्स्क), और विस्बी।

**3. जमीनी मार्ग और महाद्वीपीय मेले**

- **अल्पाइन दर्रे और नदी घाटियाँ:** भूमि मार्ग से माल की ढुलाई पर्वतीय दर्रों (जैसे, ब्रेनर दर्रा) और राइन और रोन नदियों के माध्यम से की जाती थी, जो उत्तरी इतालवी बंदरगाहों को मध्य और उत्तरी यूरोप से जोड़ती थीं।
- **व्यापार मेले:** केंद्रीकृत क्षेत्रीय बाजार उभरे जहां उत्तरी और दक्षिणी व्यापारी मिलते थे।
- **प्रमुख शहरी केंद्र:** फ्रांस में शैम्पेन मेले और जर्मनी में फ्रैंकफर्ट।

**4. महत्वपूर्ण पश्चिमी और पूर्वी केंद्र**

- **लंदन और पेरिस:** प्रमुख प्रशासनिक और जनसंख्या प्रधान राजधानियाँ जो महाद्वीपीय और अंग्रेजी वस्तुओं के लिए स्थानीय गंतव्य केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं।
- **ब्रुग्स और घेंट:** फ्लेमिश वस्त्रों के प्रमुख विनिर्माण और वितरण केंद्र, जो इंग्लैंड से आयातित कच्चे ऊन को पूरे महाद्वीप के खरीदारों से जोड़ते हैं।
- **नोवगोरोड:** रूस का एक महत्वपूर्ण पूर्वी प्रवेश द्वार शहर जो बाल्टिक व्यापार नेटवर्क को पूर्व की ओर जाने वाले फर और लकड़ी के मार्गों से जोड़ता है।

अब्बासिद साम्राज्य एक विशाल इस्लामी राज्य था जिसने 750 से 1258 ईस्वी तक मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और मध्य एशिया के कुछ हिस्सों पर शासन किया। बगदाद की भव्य, गोलाकार राजधानी में केंद्रित यह साम्राज्य इस्लामी स्वर्ण युग के लिए प्रसिद्ध हुआ - जो विज्ञान, व्यापार और दर्शन का एक समृद्ध युग था।

**भौगोलिक विस्तार**

नौवीं शताब्दी में अपने चरम पर, अब्बासिद साम्राज्य पश्चिम में इबेरियाई प्रायद्वीप (अल-अंदलस) और उत्तरी अफ्रीका से लेकर मध्य पूर्व, मध्य एशिया और पूर्व में भारत की सीमाओं तक फैला हुआ था। मानचित्र को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जहाँ क्षेत्रीय राज्यपाल (*अमीर*) या वज़ीर बगदाद में स्थित केंद्रीय खलीफा के प्रति जवाबदेह रहते हुए स्थानीय शासन का प्रबंधन करते थे।

**राजधानी शहरों**

- **बगदाद (762-836, 892-1258 ईस्वी):** खलीफा अल-मंसूर द्वारा स्थापित, "शांति का शहर" एक आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र था जहाँ विद्वान पौराणिक हाउस ऑफ विजडम में शास्त्रीय ज्ञान का अनुवाद और विस्तार करने के लिए एकत्र होते थे।
- **समारा (836-892 ईस्वी):** साम्राज्य की तुर्की सैन्य बलों पर निर्भरता के चरम पर रहने के दौरान इसने थोड़े समय के लिए राजधानी के रूप में कार्य किया।

**मुख्य विवरण और क्षेत्र**

- **रणनीतिक केंद्र:** साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों (जैसे रेशम मार्ग) को जोड़ती थी, जो भूमध्य सागर को हिंद महासागर से जोड़ती थी।
- **विखंडन:** चूंकि अब्बासिद साम्राज्य बहुत विशाल था, इसलिए अंततः उसका केंद्रीय नियंत्रण भंग हो गया, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय राजवंश अलग हो गए। इनमें से उल्लेखनीय विद्रोही राज्यों में उत्तरी अफ्रीका और मिस्र में फातिमिद खिलाफत और स्पेन में उमय्यद शामिल थे।
- **ऐतिहासिक प्रभाव:** अब्बासिद राजवंश का राजनीतिक शासन आधिकारिक तौर पर 1258 ईस्वी में समाप्त हो गया जब मंगोलों ने बगदाद को लूटा। हालांकि, इसकी सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विरासत जीवित रही और सदियों तक दुनिया को प्रभावित करती रही।